सेवा में

संपादक जी

महोदय,

यह प्रस्ताव मैत्रीभाव से आग्रहपूर्वक ध्यानाकर्षण है। क्योंकि, मानव जाति शायद एक बड़ी घटना की साक्षी बनने जा रही है। वर्ष 1893 में शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने विश्व को मानवता की सीख दी थी। अफसोस यह है तब गंगा में जल बहता था, अब गंदगी बहती है। यानी और पतन हुआ पर नियति का न्याय देखिये। lok lk lky ckn fQj o lh gh ?kVuk ?kVu tk jgh gA vrj flQ bruk g] rc u jkLrk Li’V Fkk] u efty] cl ,d शुभHkdkeuk FkhA vc ekx Hkh [kkt fy;k x;k vkj efty HkhA यह घटना अवश्यंभावी है क्योंकि हर आदमी प्रश्नों–समस्याओं के बोझ तले दबा है, जिनका उत्तर या समाधान न धर्म दे पा रहा, न राज्य, न आधुनिक विज्ञान। इसलिए प्रस्ताव है। एक नजर!!!

0 iLrko% ;g ,d ,lh शिक्षा i)fr g tk gj 0;fDr dk le>nkj vkj lpruशील cuk ldrh gA

आवश्यकताः क्योंकि, वर्तमान शिक्षा से शिक्षित व्यक्तियों की संख्या तो बढ़ रही है, पर दूसरी तरफ अमानवीयता, असंवेदनशीलता भी बढ़ रही है।

0 iLrko% ;g ,d ,sls ekuoh; lfo/kku gS tks विश्व ds gj 0;fDr dks U;k; miyC/k djk ldrk gSA

आवश्यकताः क्योंकि, पुलिस, कानून और अदालतें बढ़ाने के बावजूद किसी भी राष्ट्र का संविधान अपराध, अपराधी या अन्याय को बढ़ने से नहीं रोक पा रहा।

0 iLrko% ;g ,d ,sls mik;&mipkj gS] ftls viukus ij tUe ls eR;q rd gj 0;fDr LoLFk jg ldrk gSA

आवश्यकताः क्योंकि, नयी–नयी दवाएं, चिकित्सक और अस्पताल सामने आ रहे हैं, वहीं स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ी हैं।

0 iLrko% ;g ,d ,sls शिक्षण & प्रशिक्षण gS] ftls djus ds ckn xjhch] csjkstxkjh] vlekurk iSnk gh rjg feV tkrh gSA

आवश्यकताः क्योंकि, आधुनिक विज्ञान ने एक वर्ग को खूब साधन–सुविधाएं उपलब्ध करायीं तो दूसरी तरफ बेरोजगारी, गरीबी बढ़ी है।

0 iLrko% ;g ,d ,sls शास्त्र vkSj fopkj gS ftls

i<us&lquus&समझने ds ckn leLr ekuoksa dh tkfr ,d] lekt ,d gkus dk iek.k feyrk gSA

आवश्यकताः क्योंकि, जाति और समाजवाद का बोलबाला बढ़ा है तो दूसरी तरफ परिवार और समाज में टूटन बढ़ी है।

0 iLrko% ;g ,d ,sls दर्शन gS] ftlls n[ku&le>us dk ckn lai.kZ vfLrRo dk dkbZ प्रश्न] ftKklk] [kkst] Kku शेष ugha jg tkrkA

आवश्यकताः क्योंकि, अभी तक मौजूद कोई भी दर्शन प्रश्नमुक्ति तक नहीं पहुंचा है। इसीलिए रहस्य, चमत्कार, कर्म–कांड बचे रहे, जिनसे सामुदायिक धर्मगद्‌दियां वजूद में आयीं। राज्य, शिक्षा और समाज भी इनकी चपेट में हैं। इसलिए द्रोह, विद्रोह, शोषण और युद्ध है।

उपरोक्त दावों का आधार कुछ वर्ष पूर्व हुआ एक अनुसंधान है। यह विश्व के 700 करोड़ लोगों के प्रश्नों के उत्तर, समस्याओं के समाधान उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है। इसकी जांच पूर्व राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस श्री वैंकटचलैया के अलावा आईआईटी कानुपर, आईआईटी दिल्ली, ट्रिपल आईटी हैदराबाद के प्रोफेसरों–विद्यार्थियों समेत हजारों विद्वान कर चुके हैं, कर रहे हैं।

fu'd'kZ vkSj lek/kku

इसी अनुसंधान ने धर्म की भी व्याख्या की है। उसे ही अस्तित्व में व्यवस्था कहा है। मानव को समस्या केवल मानव से है क्योंकि मानव व्यवस्था को नहीं समझा है। यह व्यवस्था ही धर्म है। व्यवस्था को समझे बिना कोई व्यवस्था में जी नहीं सकता, इसलिए 700 करोड़ लोग अव्यवस्थित, अस्थिर और अनिश्चित आचरण का बोझ उठाये घूम रहे हैं। विश्वभर की कुल समस्या इतनी ही है। इस समाधान को सार्वजनिक और लोकव्यापी करने के लिए ही 23 अप्रैल

को कानपुर में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन है ताकि विश्वभर को वह मार्ग दिखाया जा सके, जिसके लिए यह मानवता सदियों से तृषित है।

धन्यवाद